उपरोक्त सरकारी प्रयासों के बावजूद भी साइबर अपराध एक प्रमुख समस्या के रूप में समाज में मौजूद है। साइबर अपराध ने समाज में एक नये विघटन को उत्पन्न किया है। इस प्रकार के अपराध से बचने के लिये हमें खुद जागरूक और सजग होने की आवश्यकता है। मजबूत पासवर्ड, कम्प्यूटर की जानकारी, डिजटल जागरूकता के माध्यम से अपने आपको सुरक्षित किया जा सकता है। यदि हम उपरोक्त उपायों को अपनातें तो हम सामाजिक विघ्टन की इस दर को कुछ हद तक कम करने में सहायक हो सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. Glazer, Daniel (1956.) *American Journal of Sociology*, march, P. 433-444
2. Merton. (1968) *Social Theory and Social Structure*, The Free Press, New York.
3. Sheldon, William and Glueck. 1950. Unra ling Juvenile Delinquency, Cambridge, Harvard Univ. Press.
4. Lawania, M.M. and Jain, Shashikala, (1942).*Criminology*, Research Publication, Jaipur, 1999, P.60.
5. Healy, William and Bronner, A.F.(1936), *New Light on Delinquency and its Treatment* Yale University Press, New Haven.
6. Cloward Richard & Ohlin Lloyd(1960), *Delinquency and opportunity, A Theory of Delinquent Gangs*, The Free Press, GlencoeIllinois.
7. Shaw Clifford & Mckay Henry (1942) *Juvenil Delinquency and urbanAreas*, University of Chicago Press.
8. Backer, Howard S. (1966) *Social Problems: A Modern Approach*, John Wiley and sons Inc., New York.
9. साइबर सुरक्षा पर किशोरों/छात्रों के लिये पुस्तिका, *ग्रह मंत्रालय*, नार्थ ब्ला नई दिल्ली.
10. पुलिस विज्ञान अंक 142, (जनवरी-जून 2020) पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, नई दिल्ली.
12. Cyber Crime and Role of Social Media.

******

मध्यप्रदेश की जनजातियाँ

डॉ. दिलीप कुमार सोनी
सहायक -प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
शास. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सीधी (म.प्र.)

सारांश

मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों में जनसंख्या की दृष्टि से गोंड एवं भील सबसे बड़ी जनजातियँ है। तीसरे क्रम की दावेदार अनेक जनजातियां है। इनमें से प्रमुख है बैगा, सहरिया, हल्बा, भरिया एवं कोल किन्तु जहाँ केवल गोंड़ भील जनजातियाँ कुल जनजातिय जनसंख्या की लगभग **65.5** प्रतिशत हैं। उपर्युक्त जनजातियाँ कुल जनजातीय जनसंख्या की मात्र **1** से **5** प्रतिशत तक हैं। साधारणतया इस प्रकार का विभ्रम जनजातीयों को विषम समूहों में बाँटने से ही होता है। मध्यप्रदेश की जनजातियों के प्रमुख **3** वर्ग हैं। पहले वर्ग में गोंड़ तथा गोड़ों की अभ्युत्पन्न जनजातियों को शामिल किया जाना चाहिये। दूसरा वर्ग भील तथा भीलों की निकटवर्ती जनजातियों का है जिसमें सहरिया जनजाति को भी शामिल करना उचित होगा तथा तीसरा वर्ग कोल या मुण्डा समूह की जनजातियों का है।

मुख्य शब्द- गोंड, भील, सहरिया, कोल, जनजातिय जनसंख्या

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2020-21
अंक-33-34, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्

गोड़ भारत की सबसे प्रमुख, उन्नत एवं सभ्य जनजाति है। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, ओडिशा, गुजरात एवं बिहार राज्यों में गोंड़ जनजाति का निवास है। मध्यप्रदेश में गोंड़ जनजाति लगभग सभी जिलों में निवास करती हैं। गोंड़ मूलतः तेलुगू-द्रविड़ भाषा का शब्द है जो कोण्ड का अपभ्रंश है। तेलुगू भाषा में कोण्ड शब्द का अर्थ पेड़-पौधों से आच्छादित पर्वत है। अर्थात् गोंड़ पर्वतों में निवास करने वाली जनजाति है। ऐतिहासिक अध्ययनों के अनुसार बिहार एवं पश्चिमी बंगाल के गोंड़ क्षेत्र के मूल निवासी होने के कारण इनका नाम गोंड़ पड़ा। प्राचीनकाल में इनका राज्य गोंड़वाना लैण्ड के भागों में था जिसके कारण गोंड़वाना लैण्डवासी गोंड़ कहलानेलगे। गोंड़ भारत की जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ी और समृध्द जनजाति हैं। प्राचीनकाल में गोंड़ साम्राज्य छिंदवाड़ा, मण्डला, चांदा, आदिलाबाद, बारंगल, मध्य प्रांत और बरार में फैला हुआ था। छिंदवाड़ा का देवगढ़ राजवंश, वारंगल को खेरला राजवंश,मण्डला का दुर्गावती राजवंश समृध्द राज्य थे। वर्तमान में गोंड़ जनजाति सम्पूर्ण मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में फैली हुई है। (हसनैन 2004)।

गोंड़ की उपजातियाँ-

फुक्स के अनुसार, गोंड़ों का सामाजिक संगठन विभिन्न प्रणालियों पर आधारित है। ये कुलगत एवं क्षेत्रीय हैं। गोंड़ों के सर्वाधिक प्रचलित गोत्र मरकाम नेता और रे काम हैं।ये अनेक उपविभागों में बँटी हुई है। (1) राजगोंड़-गोंड़ की यह उपजाति सर्वश्रेष्ठ गोंड़ कहलाती है तथा यह प्राचीन गोंड़ साम्राज्य की वंशावली मानी जाती है। यह नाम व पदवी व्यावहारिक रूप से गोंड़ों की भू-स्वामी उपशाखा के लिये जानी जाती है। (2) रघुवाल गोंड- मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के कृषक रघुवाल गोंड़ कहलाते हैं। (4) फाडलगोंड़-राजगोंड़ के पुरोहित पाड गोंड कहलाते हैं। (5) औजयाल गोंड़ - गोंड़ों की यह उपजाति गोंड़ों का गुणकान करती है। (6) धोली गोंड़- धोली गोंड़ वैवाहिक अवसरों पर ढोल, बजानेका काम करते है। (7) थोटयाल गोंड़ - ये टोकरी बनाने का काम एवं जड़ी-बूटियाँ एकत्र करते हैं। (8) मारिया गोंड़- छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र के निवासी मारियार गोंड़ कहलाते है। (9) कोई कोपाल गोंड़-गोंड़ों की यह जनजाति पशुचारण का काम करती है। (10) भूरिया गोंड़- छत्तीसगढ़ के मारिया गोंड़ से संबंधित होते है। ये मुरिया गोंड़ के लिये घोटुल (युवा गृश्हों) का निर्माण करते है। (11) मारी गोंड़-गोंड़ में सबसे पिछड़ी हुई अवस्था मारी गोंड़ है। ये कृषि एवंतेल का कार्य करते हैं। (12) रामनवासी गोंड़-गोंड़ों की यह उपजाति भी पिछड़ी हुई अवस्था में हैं। (13) कोलानगोंड़- कोलान गोंड़ कबीले में वैवाहिक अवसरों पर उपस्थित रहते हैं।

शारीरिक बनावट-गोंड़, द्रविड़ प्रजाति के माने गये है। इनकी त्वचा रेग काला, बाल सीधे एवं काले होते हैं। इनके होंठ पतलें, नथुने फैले हुये, मुँह और सिर चौड़ा रहता है।

भाषा- गोंड़ गोंड़ी भाषा का प्रयोग करते हैं। इनकी भाषा में द्रविड़ भाषा परिवार की तेलगू भाषा का प्रभाव है।

गोंड़ आवास - गोंड़ जनजाति प्रकृति की खोज में किसी पहाड़ी, घाटी, जंगल या नदी के किनारे रहना पसंद करती है। इसलिये अधिकांश गोंड़ गाँव सड़क में दूर जंगलों में बसे होते है।ये स्वभावः प्रकृति प्रेमी होते हैं। इनका प्राकृतिक जीवन एक आदर्श जीवन है। मध्यप्रदेश के मण्डला, बालाघाट, छिंदवाड़ा, डिण्डोरी, शहडोल, उमरिया, जबलपुर, बैतूल आदि में गोड़ों का निवास है। गाँवों में गोंड़ों की बहुलता के कारण सारे गाँव गोंड़ गाँव ही कहइलाते हैं। प्रारंभ में गोड़ जनजाति द्वारा स्थानांतरिक कृषि की जाती थी, इसलिये इनका निवास भी बदलता रहता था लेकिन आजकल ये स्थाई कृषि करने लगे हैं, जिससे इनका निवास भी स्थायी हो गया है। गोंड़ों के घर छोटे-छोटे झोपड़ीनुमा व मिट्टी के बने हुए होते हैं। इनके मकान की छत, घास-फूस या देशी खपरैल की बनी होती है। घर दो-तीन कमरों के होते हैं। घर के सामने बरामदा होता है, दरवाजे, बाँस या लकड़ी के बने होते है। इनके घरों के सामने दीवारों से घिरा हुआ आंगन होता है। घर के पीछे का भागबाड़ी कहलाता है। जिसमें ये सब्जी-भाजी लगाते है। लकड़ी मिट्टी और बांस के बने इनके घर पहाड़ी ढालान या पर्याप्तकृषि योग्य भूमि के पास होते है। पहाड़ी क्षेत्र के निवासी मारिया गोंड़ और मैदानी क्षेत्र के निवासी मुरिया गोंड़ कहलाते हैं।

गोंड़ों के घर के अंदर अनाज रखने की मिट्टी की कोठी होती है। जिसके एक तरफ देवी-देवताओं का स्थान रहता है। इनके घर काफी कलात्मक और साफ-सुथरे होते हैं। जो लगभग 30 से 35 फीट लबे और 15 से 20 फीट चौड़े हाते हैं। इनके घरों में एक कमरा अतिथि के लिये होता है और घर के बगल में पशुओं के लिये एक पृथक स्था रखा जाता है गोंड़ों के घरों की दीवारों पर स्त्रियाँ मिटी से ही विभि प्रकार की कलात्मक आकृतियाँ बनाती हैं जिसमें फूल-पत्ते, पशु पक्षियों की आकृति प्रमुख होती है। घर बनाते समय में शुभ-अशुभ का विशेष ध्यान रखते हैं। इसलिये घर का काम प्रारंभ करने के पहले पारम्परिक पूजा पाठ अनिवार्यतः किया जाता है।

गोड़ वस्त्र- गोंड़ो का पहनावा साधारण होता है। सूती माटे कपड़े पहनते है। ये कपड़ा खरीदक कर स्वयं ही सिलाई करते है। पशुओं के उन से कम्बल स्वयं तैयार किये जाते है। गोंड़ पुरूष घुटने तक धोती, बड़ी, कंधे पर पिछौरा अर्थात दुपट्टा, सिर पर मुरैठा (पगड़ी गमछे की बनी हुई) बांध जाते है। कलाई में चांदी का चूड़ा, गले में मोहर तथा कान में बूँदा पहनते है। वहीं गोड़ स्त्रियाँ छः आठ गज की मोटी साड़ी घुटने तक कांछ लगाकर पहनती है। पुरूषों द्वारा नीली या काली बण्डी विशेष रूप से पहनी जाती है। जबकि गोंड़ महिलायें लाल, जामुनी, गहरे रंग के साथ सफेद रंग पसंद करती है। गोंड़ स्त्रियाँ द्वारा चुरिया, पटा, बहुरा, चुटकी, तोड़ा, पैरी सतुवा, हमेल, ढरि-झटका, तरवी दारी,टकुसी आदि आभूषण पहने जाते । गोंड़

महियें गहनों के साथ साथ मुख, जाँघ और हाथें में गुदना बड़े चाव से गुदवाती है। ये अपनी केश सज्जा के प्रति सदैव सतर्क रहती है और कंघा इनके बालों में सदैव घुसा रहता है।

गोंड़ भोजन- गोंड़ जनजाति का प्रिय भोजन कोदों, कुदकी और बाजरे का पेड़ा है। चावल, सब्जी, ज्वार व गेहूँ का भी ये लोग आजकल खाने में उपयोग करने लगे है। कन्दमूल-फल, जंगली जानवरों का मंस और कोदों का भात इनका प्रिय आहार है। बस्तर के गोंड़ चूहे और चींटी भी खाते हैं। गोड़ों का प्रिय पेय महुयें की शराब हैं। महुआ इनके लिए देवअन्न है। इनका कोई भी सामाजिक एवं अनुष्ठानिक कार्य महुआ की शराब के बिना शुरूनहीं होता है। (शर्मा 2009) ।

गोंड़ सामाजिक संगठन - गोड़ों क निवास सड़क मार्ग से दूर जंगलों म होता है। एक गोड़ गांव में 10 से 20२25 गोंड़ परिवारों की बसावट रहती है। प्रदेश के अधिकांश गोंड़ गांव में सिर्फ गोंड़ ही निवास करते है। इन्हें दो वर्गो में बांटा गया है। एक शासक वर्ग जिसमें माल गुजार, मुकदम पटेल होते है जिन्हें राज गोंड़ कहा जाता है, वहीं दूसरा मजदूर वर्ग होता है जिसमें मजदूर, कृषक, कर्मचारी होतें जिन्हें घुरगोंड़ कहा जाता है। गोंड़ समाज पितृ सत्तात्मक होते है। इनके यहां ऐसी मान्यता है कि पुरूष बीज और नारी खेत हैं और बीज, चोती से अधिक महत्वपूर्ण होता है। इसलिये इनके यहां पुरूषों का ज्यादा महत्व है। ये परिवार का मुखिया होता है। पितृसत्तत्मक परिवार व्यवस्था के साथ ही साथ गोंड़ों में एकल परिवारों का अधिक चलन है, संयुक्त का कम। गोंड़ जनजाति में विवाह पश्चात लड़का- बहू को अपने मूल परिवार से अलग रहने की परम्परा है। घर में मुखिया और वृध्द की आज्ञा सभी को माननी होती है। स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर के भीतर ही नहीं घर के बाहर भी हरता है। गोंड़ों का सामाजिक जीवन अत्यंत उन्नत है। ये गोंड़ी बोली बोलते हैं। इनका भाषा में द्रविड़ भाषा परिवार की तेलगू भाषा का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट, होशंगाबाद, पूर्वीनिमाड के गोंड़ लगभग शुध्द द्रोंड़ी बोलते है जब कि मण्डला की बगोंड़ी बोली छत्तीसगढ़ से प्रभावित होने के कारण शुध्द नहीं हैं। गोंड़ों की उपजाति मुरिया और माडिया लोग गोंड़ी के साथ ही हल्बी का भी प्रयोग सरलता से करते है। आजकल सामान्य बोलचाल में ये लोबग हिन्दी का व्यवहार करते हैं। गोंड़ों में संस्कार गीत, ऋतु पर्व-त्यौहार एवं अन्य सामाजिक गीत गाने की परत्परा है। इनके प्रसिध्द गीतों में करमा, ददरिया, सुआ, फाम, रीना, भडौनी, सजनी आदि हैं। गीतों के अलावा गोंड़ों में आदिम गाथायें जिनमें पंडवानी, रामायणी, गोंडवानी का भी प्रचलन है। छत्तीसगढ़ की तीजनबाई पंडवानी गाथा महाभारत पर आधारित के लिये आज गोंड़ों में ही नहीं बल्कि विश्व प्रसिध्द हो चुकी है। गीत, गाथा के साथ ही साथ गोंड़ जनजाति में पहेलियाँ छोटी-छोटी गाथाओं का भी प्रचलन है। इनके जीवन में मिथकों का भी विशेष महत्व है। धरती, आकाश, सूर्य, चाँद, पेड़-पौधे, जलवायु पशु पक्षी की उत्पत्ति से संबंधित कथायें इनके जीवन का अभिन्न अंग हैं। इन मिथक

कथाओं में गोंड़ों के समस्त विश्वास ओर आस्था स्पष्ट होते है जिनसे स्पष्ट होता है कि इन्होंने जीवन के प्रत्येक रहस्य और यथार्थ को कितनी गहराई से जाना है।

गोंड़ धर्म- गोंड़ जनजाति हिन्दू धर्म से गहराई से प्रभावित एक बहुदेववादी समाज है। इनके देवी देवता है। इसमें बड़ा देव प्रमुख है। ठाकुरदेव, नागेश्वरदेव, लिंगोदेव, बहिसासुर, भैंसासुर, दूल्हादेव, भैरवदेव, भरईमाता, रातमाई, पृथ्वीमाता, शीतलामाता, खेरमाई, गंगाइन माई प्रमुख हैं। भूमि का चयन, फसल बुआई, वर्षा, शिकार, बीमारीं बुरी आत्मा से रक्षा के लिये ये झाड़-फूक, जादू टोना आदि तंत्र-मंत्र करते है। इनकी धार्मिक कियायें ओझ या बैगा कराता है। बड़ा देव के विषय में इनकी मान्यता है कि यह ब्रम्हचारी है, उपकार करने वाला है। वह फूल से पैदा होता है, इसलिये उनका स्वभाव फूल जैसा कोमल है और फूल की सुंगध जैसा है। केसर हल्दी के बिस्तर पर खेला कूदा है और कांटे के बिछौना पर बैठकर तपस्या की है। अतः यह उपकार करने वाला देव है। गोंड़ लोग तंत्र-मंत्र, जादू टोना, भूत पिशाच में विश्वास करते है। वर्षा न होने पर कई बार गोंड़ लड़कियां निर्वस्त्र होकर हल जोतती है। गोंड़ों में गोत्र और टोटम का विशेष महत्व है। गोंड़ टोटम के प्रति भय और श्रध्दा रखते हैं। गोंड़ों के नौ गोत्र है।

गोंड़ सरकार- गोंड़ परम्परावादी जनजाति है। ये रीति रिवाजों और परम्पराओं से बंधा हुआ है। ये अपने परम्परागत रीति रिवाजों से अलग नहीं होना चाहते है। इनके यहां जन्मसे मृत्यु तक की विभिन्न परम्पराओं का निर्वहन किया जाता है। गोंड़ समाज में नवजात शिशु के जन्म को बहुत शुभ माना जाता है। आदिवासी लोग संतान को गोंड़ परिवार की समृध्दि की निशानी मानते है। इनके यहां पुत्र पुत्री को समानभाव से देखा जाता है इसलिये गर्भिणी स्त्रियों का सम्मान बढ़ जाता है। इनके यहां जन्म के बारहवें दिन नामकरण होता है जिसमें नाते-रिश्तेदारों को आमंत्रित करके भोजन कराया जाता है। जन्म संस्कार की तरह ही गोंड़ों में विवाह संस्कार वंश वृध्दि के साथ ही प्रेम,सहयोग और आकर्षण का अभिव्यक्ति होते है। गोंड़ों में राजस्वला होने के पूर्व लड़की का विवाह करना गोंड़ पवित्र कार्य मानते हैं। गोंड़ जनजाति एक विवाही है। ये अपने गोत्र, टोटम तथा समूह के बाहर विवाह करते है। इनमें मेरे फुफरे भाई-बहनों के विवाह का भी प्रचलन है। विवाह पूर्व यौन संबंधों को समाान्य माना गया है, लेकिन विवाह पश्चात के यौन संबंधों पद इनके यहाँ प्रतिबंध है।ये व्यभिचार को बर्दाश्त नहीं करते है। पति-पत्नी घर में भी यौन संबंध नहीं कर सकते। अतः ये घर के बाहर जंगल का प्रयोग करते है। इसके पीछे इनकी मान्यता है कि घर में पूर्वजों की आत्मा के निवास करने के कारध घर में संभोग करने सेआत्मा नाराज हो जायेगी। लेकिन आजकल इस परम्परा का अधिकांश गोंड़ों में पालन नहीं किया जा रहा है। इनके यहां सामान्यतः सामान्य विवाह, सहमति विवाह, सेवा विवाह, हरण विवाह, विनिमय विवाह, क्रय विवाह, लमझ्ना विवहों का चलन है। गोंड़ जनजाति में युवाओं के प्रशिक्षण के लिये घोटुल अर्थात.युवा गृह की व्यवस्था है। चंदा और बस्तर में घोटुल का सर्वाधिक

प्रचलन है। घोटुल गांव के एक किनारे पर बना हुआ एक बड़ा घर या कमरा होता है। इसमें गांव के सभी कुँआरे लड़के-लड़कियाँ रात्रि में एकत्र होते है। लड़के को मोटियारी कहा जाता है। घोटुल का मुखिया सिरदार, सिलेदार या कोटवार कहलाता है। घोटुल में युवा यौन इच्छा का मार्गदर्शन प्राप्त करते है और अपना जीवन साथी चुनते है। वे यहां पर रात भर नाचते गाते हैं। मुरिया घोटुल में यौन संबंधों की छूट रहती है जबकि अन्य घोटुल में इसकी मनाही हैं। गोंड़ पुनर्जन्म को स्पष्ट रूप से नहीं मानते है। मरने के बाद अपने कर्म का फल भोगना पड़ेगा इस बात पर गोंड़ कभी विश्वास नहीं करते है। इसलिये स्वर्ग एवं नरक की अवधारणा भी गोंड़ों में बहुत क्षीण है। ये देव योनि और भूत योनि में विश्वास रखते है। कर्म के अनुसार आत्मा को भूत योनि एवं देव योनि प्राप्त होती है। गोंड़ों में अग्निदाह और दफनाने की प्रथा है। स्वाभाविक मौत से मरे व्यक्ति का अग्निदाह किया जाता है एवं बीमारी, सर्पदंश से होने वाली मृत्यु में मस्तक को दफनाया जाता है।

गोड़ों का आर्थिक संगठन - गोंड़ की अर्थव्यवस्था पूर्णतः वन और कृषि पर आधारित है। मध्यप्रदेश के 64 प्रतिशत गोंड़ कृषक है। कुछ गोंड़ वनोपज संग्रह, मछली का शिकार, मजदूरी करके जीवनयान करते है। कोंदों, कुटकी धान, ज्वार, तुअर, उड़द, मूँग, तिहलन आदि की खेती के साथ ही तेंदूपत्ता, आचार, हर्रा, आंवला, महुआ, सालबीज, मोहलाईन पत्ता वनोपज का संग्रहण करते है। गोंड़ें की आमदनी कम और खर्च अधिक होने के काण ये हमेशा आर्थिक संकट में रहते है। लेकिन वर्तमान में शिक्षा के प्रसार एवं विकास के नये आयामों का कारण गोंड़ों की आर्थिक स्थिति में व्यापक सुधार हुआ है।

गोड़ों का आर्थिक संगठन- गोंड़ जनजाति का अपना राजनीतिक संगठन है। प्रत्येक गांव में इन जाति पंचायत रहती है जिसका मुखिया मुकदमा कहलाता है जो सभी विवादों, भूमि, धार्मिक सामाजिक मामले देखता है। इनका राजनीतिक संगठन काफी सशक्त है। इनके यहां परम्परागत राजनीतिक संगठन आज भी विद्यमान है। वर्तमान में मध्यप्रदेश में गोंड़ जनजाति में आधुनिकता के सम्पर्क के कारण तीव्रता से परिवर्तन हो रहा है।

वर्तमान में इनका पहनावा और भोजन बहुत कुछ परिवर्तित हो गया है। आधुनिक कृषि के साथ साथ गोंड़ शासकीय नौकरी भी करने लगे है। चिकित्सा में झाड़ फूंक का प्रचलन घट रहा है। गोंड़ संस्कृतिकरण के कारण स्वयं को क्षत्रि बताने लगे है। इसलिये गोंड ठाकुर द्वारा स्वयं का परिचय कराते हैं।

विधि तंत्र - प्रस्तुत अध्ययन में सर्वप्रथम क्षेत्र का निर्दशन लिया गया है जिसमें सीधी, सिंगरौली जिले का चुनाव किया गया है। तत्पश्चात 50 गोंड़ जनजाति के उत्तरदाता के रूप में उद्देश्य पूर्ण निदर्शन का चुनाव करते हुए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। जो क्षेत्र में जाकर उनसे भरवाई गई है।

तालिका क्रमांक 01

रोजगार की स्थिति की जानकारी संबंधी

क्रं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	कृषि	11	22
2.	जंगली उपज	14	28
3.	नौकरी	08	16
4.	मजदूरी	17	34
	योग-	50	100

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 01 से स्पष्ट होता है कि जब गोंड़ जनजाति के उत्तरदाताओं से पूछा गया कि आपके आर्थिक संसाधन क्या है तो कुल 50 उत्तरदाताओं में से 11 उत्तरदाताओं ने कृषि अपनी जीविकोपार्जन का साधन बताया यद्यपि जब उनसे कृषि हेतु जमीन की बात की गई तो उनके पास स्वयं की पट्टेवाली जमीन नहीं थी बल्कि वे सरकारी जमीन को जंगलों में है उसे ही साफ सुथरा करके परम्परागत खेती का कार्य करते है। 14 ऐसे उत्तरदाता थे जिन्होंने जंगली उपज जैसे चार, चिरौंजी, जड़ी-बूटी आदि से अपना जीविको पार्जन बताया। 08 ऐसे उत्तरदाता भी थे जो नौकरी जैसे पटवारी, शिक्षक करते थे, वे शहरी क्षेत्र में रहने लगे है जिससे उनके रहन सहन पर भी प्रभाव देखने को मिल रहा है।

तालिका क्रमांक 02

सामाजिक रीति रिवाजों को मानने संबंधी

क्रं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	28	56
2.	नहीं	18	36
3.	मालुम नहीं	04	08
4.	मजदूरी	17	34
	योग-	50	100

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 02 से स्पष्ट होता है कि जब गोंड़ जनजाति के उत्तरदाताओं से पूछा गया कि आप अपनी पुरानी सामाजिक रीति रिवाजों को मानते है तो सर्वाधिक 28 उत्तरदाताओं ने हमें बतात

करते हुए कहा कि यह हमारी विरासत है इसे हम नहीं छोड़ सकते है। यद्यपि इन उत्तरदाताओं में पुरानी या ज्यादा उम्र के लोग थे जिससे पुरानी सामाजिकता निभाने की मजबूत स्थिति देखने को मिलती । जबकि 18 उत्तरदाता ऐसे मिले जिहोंने सामाजिक रीति रिवाजों को भिाने की एक सिरे से खारचि कर दी और कहा कि समाज में आधुनिकता आ रही है, अब हम पुरानी बातों को पकड़े नहीं रह सकते। इसमें ऐसे उत्तरदाता थे जो युवा थे । स्कूल, कालेज के सम्पर्क में थे। 04 ऐसे भी उत्तरदाता थे जो असंमजस की स्थिति में थे वे ये हाँ और ना दोनों में स्थिति स्पष्ट नहीं कर पा रहे थे।

तालिका क्रमांक 03

शिक्षित होने संबंधी जानकारी

क्रं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	26	52
2.	नहीं	24	48
	योग-	50	100

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 03 से स्पष्ट होता है कि जब गोंड़ जनजाति के उत्तरदाताओं से पूछा गया कि क्या आप अशिक्षित है तो कुल 50 उत्तरदाताओं में से 26 ने हाँ में उत्तर देते हुए अपने आपको शिक्षित बताया। यहएक परिवर्तनशील स्थिति को दर्शाता है, किन्तु इसका एक कमजोर पक्ष या भी है कि शिक्षित में भी उच्च शिक्षित या स्नातक बहुत कमउत्तरदाता मिले, जिससे निर्णय कारित का विकास हुआ हो। अधिकांश ऐसे उत्तरदताओं का था जो हायर सेकेण्डरी के नीचे वाले थे। इनकी खास बात यह है कि वे अपने आपको शिक्षित 18 उत्तरदाता ऐसे मिले जिहोंने सामाजिक रीति रिवाजों को निभाने की एक सिरे से खारिच कर दी और कहा कि समाज में आधुनिकता आ रही है, अब हम पुरानी बातों को पकड़े नहीं रह सकते। जबकि 24 ऐसे उत्तरदाता थे जिन्होंने नहीं में जबाव देते हुए अपने आपको अशिक्षित बताया है, किन्तु जब इनको सामाजिक जागरूकता के बारे में प्रश्न किये गये तो इनके अनुभव न केवल आश्चर्य का एहसास करवाते है बल्कि अच्छा लाभ करने की ओर इशारा करते है।

निष्कर्ष-

1. जनजातियों में यदि आर्थिक आधार की बात की जाए तो यह अभी बहुत कमजोर रहै। इनके पास अभी भी कमाई को कोई ठोस आधार देखने को नहीं मिलता। वे जैसे तैसे अपना जीविको पार्जन करते है।

2. मध्यप्रदेश की जनजातियों का परिवर्तन के दौर से गुजर रही है अब धीरे धीरे पुरानी रीति विाजों को छोड़ती जा रही है तो जैसे जैसे वे आधुनिक समाज को सम्पर्क में आ रही है उनमें आधुनिकता का प्रसार हो रहा है औैर इससे उनमें आमूल चूल परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

3. मध्यप्रदेश की जनजातियों में शिक्षा का प्रतिशत लगातार बढ़ता जा रहा है किन्तु अभी भी वह इतना नहीं है कि उनमें सामाजिक जागरूकता का विकास पर्याप्त मात्रा में हो सकें। वह केवल कुछ कक्षायें पढ़कर अपने आपको शिक्षित कहते है या कहलाने लगे लेकिन जो शिक्षा का उद्देश्य है वो शायद अभी अधूरा है।

सुझाव-

1. मध्यप्रदेश की जनजातियों में सबसे बड़ी समस्या जीविकोपार्जन की है उसे दूर करने में सर्वाधिक प्रयास की जरूरत होगी क्योंकि यह व्यक्ति पेट भरने की समस्या से ही जूझता रहेगा, तो वह विकास जैसी अवधारणा को कभी पूरा नहीं कर पायेगा।

2. मध्यप्रदेश की जनजाति में सामाजिक जागरूकता के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन सरकारी स्तर पर होना चाहिये और वह सरकारी आंकड़े में वृध्दि तक ही सीमिति नहीं रह जाए बल्कि यथार्थता के धरातल पर भी उसे उतरना चाहिये।

3. मध्यप्रदेश की जनजातियों में शिक्षा के स्तर को तो बढ़ाने का प्रयास होना चाहिए किन्तु यह केवल आंकड़ों का खेल साबित न हो बल्कि उनमें शिक्षा प्राप्त करने के बाद सही और गलत का निर्णयकारित का विकास भी होना चाहिये। क्योंकि प्रायः देखा जाता है कि वह अपने आपको शिक्षित तो कहते है किन्तु सदैव दूसरों के मुहों की तरह उपयोग कर लिये जाते है। चाहे वह चुनाव में हो या अन्य मामलों में प्रायः ऐसी स्थिति देखने को मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. हसनैन नदीम (2004) *समकलीन भारतीय समाज, एक समाजशास्त्रीय परिदृश्य,* भारत बुक सेन्टर 17, अशोक मार्ग लखनऊ, पृ. 212-215.
2. जोशी, ओमप्रकाश (2008) *भारत में सामाजिक परिवर्तन,* रिसर्च पब्लिकेशन्स 89 त्रिपोलियों बाजार, जयपुर पृ. 100.
3. शर्मा के. एल. (2006)- *भारतीय सामाजिक सरंचना एवं परिवर्तन,* रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ.84.
4. शर्मा श्रीनाथ (2009) *जनजातीय समाजशास्त्र,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृ.123.
5. सिंह एम.एन. (2008), *आधुनिक समाजशास्त्रीय निबंध,* विवेक प्रकाशन, 7-यू.ए. जवाहर नगर, दिल्ली, पृ.120.
6. त्रिवेदी, आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (1998), *रिसर्च मैथ्डोलाजी,* कालेज बुक डिपो, जयपुर
7. मीणा, डॉ. रमेशचन्द्र (2013), *आदिवासी विमर्श,* राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
8. सिंह, डॉ. रामगोपाल (2011), *भारतीय दलित समस्यायें एवं समाधान,* म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
9. नायडू, पी.आर. (2002), *भारत के आदिवासी विकास की समस्यायें* राधा पब्लिकेशंसन, नई दिल्ली.
10. शुक्ल, हीरालाल (2001), *आदिवासी भाषा विज्ञान,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

******